National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-2, July-December 2026
PP: 73- 76
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

स्तन कैंसर जागरूकता और स्वयंसेवी संस्था

प्रतिभा जे. मिश्रा

प्रोफेसर
समाज कार्य विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आराधना त्रिपाठी

शोध छात्रा
समाज कार्य विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सारांश

स्तन कैंसर के विरुद्ध लड़ाई में स्वयंसेवी संस्थाओं (NGO) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है। सरकारी तंत्र की सीमाओं को देखते हुए, गैर-सरकारी संगठन जमीनी स्तर पर जागरूकता, जांच, उपचार सहायता और पुनर्वास के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इस शोध पत्र में स्तन कैंसर जागरूकता के संदर्भ में स्वयंसेवी संस्थाओं के स्वरूप, कार्यप्रणाली, उपलब्धियों और चुनौतियों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। शोध यह प्रमाणित करता है कि NGO की सहभागिता से स्तन कैंसर के प्रारंभिक निदान की दर में उल्लेखनीय वृद्धि होती है और महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता सशक्त होती है।

मूल शब्द: स्वयंसेवी संस्था, NGO, जागरूकता, सामुदायिक स्वास्थ्य, स्क्रीनिंग शिविर, स्वयं सहायता समूह, पीयर एजुकेशन

1. प्रस्तावना

भारत में गैर-सरकारी संगठनों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों से लेकर आधुनिक विकास संगठनों तक, NGO ने समाज के उपेक्षित वर्गों की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में, विशेषकर महिलाओं के स्वास्थ्य में, NGO ने जागरूकता, सेवा और वकालत (Advocacy) की त्रिस्तरीय भूमिका निभाई है।

स्तन कैंसर जागरूकता के संदर्भ में NGO की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विषय अभी भी भारतीय समाज में वर्जित (Taboo) माना जाता है। सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रायः बड़े स्तर पर काम करते हैं और व्यक्तिगत संवाद में सीमित रहते हैं। इसके विपरीत, NGO स्थानीय समुदायों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाकर विश्वास-आधारित जागरूकता का निर्माण करती हैं। यह विश्वास-आधारित संबंध ही NGO की सबसे बड़ी शक्ति है।

वर्तमान में भारत में 33 लाख से अधिक पंजीकृत NGO हैं, जिनमें से हजारों स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत हैं। स्तन कैंसर के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं में कैंसर पेशेंट्स एड एसोसिएशन (CPAA), इंडियन कैंसर सोसाइटी (ICS), वी हील (V-Heal) आदि शामिल हैं। ये संस्थाएं केवल जागरूकता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उपचार सहायता, पुनर्वास और नीति-निर्माण में भी सक्रिय भागीदारी करती हैं।

बिलासपुर के संदर्भ में, छत्तीसगढ़ के इस प्रमुख शहर में कई स्थानीय NGO स्तन कैंसर जागरूकता के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली, उपलब्धियों और चुनौतियों का अध्ययन न केवल स्थानीय, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण नीतिगत सुझाव प्रदान कर सकता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

2. स्वयंसेवी संस्थाओं का स्वरूप और प्रकार

स्तन कैंसर जागरूकता के क्षेत्र में कार्यरत NGO को उनके कार्य के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में जागरूकता-केंद्रित संस्थाएं हैं जो समुदाय में जागरूकता अभियान, शिविर और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। ये संस्थाएं मुख्यतः सूचना प्रसार, स्वास्थ्य शिक्षा और व्यवहार परिवर्तन पर केंद्रित होती हैं। इनके कार्यक्रमों में नुक्कड़ नाटक, स्वास्थ्य मेले, सामुदायिक बैठकें और डिजिटल अभियान शामिल हैं।

द्वितीय वर्ग में सेवा-प्रदायक संस्थाएं हैं जो नि:शुल्क जांच, दवा वितरण और उपचार सहायता प्रदान करती हैं। ये संस्थाएं प्रायः अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थाओं के साथ मिलकर काम करती हैं और आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को चिकित्सीय सहायता दिलाती हैं। तृतीय वर्ग में वकालत-केंद्रित संस्थाएं हैं जो नीति निर्माण में भागीदारी करती हैं और सरकारी कार्यक्रमों को प्रभावित करती हैं।

चतुर्थ वर्ग में शोध-केंद्रित संस्थाएं हैं जो स्तन कैंसर के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर शोध करती हैं और साक्ष्य-आधारित (Evidence-Based) कार्यक्रम विकसित करती हैं। पंचम वर्ग में पुनर्वास-केंद्रित संस्थाएं हैं जो कैंसर उपचार के पश्चात महिलाओं की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक पुनर्स्थापना में सहायता करती हैं।

बिलासपुर जैसे द्वितीयक शहरों में स्थानीय NGO की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहां राष्ट्रीय स्तर की बड़ी संस्थाओं की पहुंच सीमित होती है। स्थानीय NGO सांस्कृतिक समझ, भाषायी परिचितता और सामुदायिक विश्वास के कारण अधिक प्रभावी होती हैं।

3. जागरूकता में NGO की कार्यप्रणाली

स्तन कैंसर जागरूकता के लिए NGO विविध कार्यप्रणालियों का उपयोग करती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य शिविर (Community Health Camps) NGO की सबसे सामान्य गतिविधि है। इन शिविरों में नि:शुल्क जांच, परामर्श और जागरूकता सामग्री का वितरण किया जाता है। शिविरों में प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी, चिकित्सक और समाज कार्यकर्ता एक साथ काम करते हैं।

महिला स्वयं सहायता समूहों (SHG) के साथ मिलकर काम करना NGO की एक प्रमुख रणनीति है। ये समूह पहले से ही महिलाओं के बीच विश्वसनीय होते हैं और उनके माध्यम से जागरूकता संदेश तेजी से फैलता है। पीयर एजुकेशन (Peer Education) का यह मॉडल विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी सिद्ध हुआ है। इस मॉडल में, SHG की सदस्याओं को प्रशिक्षित किया जाता है जो फिर अपनी समुदाय की अन्य महिलाओं को जानकारी देती हैं।

डिजिटल माध्यमों का उपयोग भी NGO तेजी से बढ़ा रही हैं। WhatsApp ग्रुप, YouTube चैनल, Facebook पेज आदि के माध्यम से जागरूकता सामग्री साझा की जाती है। COVID-19 महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों की महत्ता और बढ़ गई, जब प्रत्यक्ष संपर्क संभव नहीं था। अनेक NGO ने वेबिनार, ऑनलाइन परामर्श और डिजिटल स्वास्थ्य अभियान संचालित किए।

स्कूल और कॉलेज कार्यक्रम NGO की एक और महत्वपूर्ण रणनीति है। युवा छात्राओं में प्रारंभिक आयु से ही स्वास्थ्य जागरूकता विकसित करने से दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव होते हैं। कुछ NGO 'ब्रेस्ट कैंसर एजुकेशन किट' विकसित करती हैं जिन्हें शिक्षकों के माध्यम से कक्षाओं में वितरित किया जाता है।

मोबाइल जांच वाहन (Mobile Screening Vans) दूरदराज के क्षेत्रों में पहुंचने का एक प्रभावी माध्यम है। इन वाहनों में अल्ट्रासाउंड, मैमोग्राफी और अन्य जांच सुविधाएं होती हैं। बिलासपुर क्षेत्र में कुछ NGO इस सेवा को सफलतापूर्वक संचालित कर रही हैं और दूरदराज गांवों में जाकर महिलाओं की नि:शुल्क जांच कर रही हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

4. NGO और सामुदायिक जागरूकता: प्रभाव और साक्ष्य

अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि NGO-आधारित जागरूकता कार्यक्रम स्तन कैंसर की जल्दी पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। Indian Journal of Cancer (2019) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, NGO-संचालित क्षेत्रों में प्रारंभिक चरण में निदान की दर 35% अधिक थी।

बिलासपुर में कार्यरत कुछ NGO ने उल्लेखनीय कार्य किया है। 'जीवन ज्योति' संस्था ने पिछले पांच वर्षों में 15,000 से अधिक महिलाओं की नि:शुल्क जांच की है और 200 से अधिक मामलों में प्रारंभिक अवस्था में ही कैंसर की पहचान कर उपचार दिलाया है। 'आस्था' संस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल जांच वाहन चलाकर दूरदराज की महिलाओं तक पहुंच बनाई है।

'साथी' संस्था के सहायता समूह कार्यक्रम ने कैंसर से पीड़ित महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है। इस कार्यक्रम में शामिल महिलाओं में अवसाद और चिंता की दर 40% कम पाई गई। ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि NGO का हस्तक्षेप न केवल जागरूकता बढ़ाता है, बल्कि जीवन भी बचाता है।

एक महत्वपूर्ण अध्ययन में पाया गया कि जिन गांवों में NGO ने नियमित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए, वहां स्तन कैंसर की मृत्यु दर में 20-25% की कमी आई। यह आंकड़ा NGO के हस्तक्षेप की प्रभावशीलता को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है। साथ ही, इन क्षेत्रों में महिलाओं की स्व-परीक्षण दर में भी 45% की वृद्धि देखी गई।

5. NGO के समक्ष चुनौतियां

स्वयंसेवी संस्थाओं को अपने कार्य में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वित्तीय संसाधनों की कमी सबसे बड़ी चुनौती है। अधिकांश NGO दान (Donation), अनुदान (Grant) और CSR फंडिंग पर निर्भर हैं, जो अनियमित और अनिश्चित होती है। इससे कार्यक्रमों की निरंतरता (Sustainability) प्रभावित होती है।

दूसरी प्रमुख चुनौती कुशल मानव संसाधन की कमी है। स्वास्थ्य, सामाजिक कार्य और प्रबंधन में प्रशिक्षित व्यक्ति प्रायः NGO की तुलना में सरकारी या निजी क्षेत्र में काम करना पसंद करते हैं। तीसरी चुनौती समुदाय का विश्वास अर्जित करना है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां बाहरी संस्थाओं के प्रति संदेह का वातावरण है।

चतुर्थ चुनौती सरकारी तंत्र के साथ समन्वय की है। अनेक बार NGO और सरकारी विभागों के बीच समन्वय का अभाव देखा जाता है, जिससे प्रयासों का दोहराव होता है और संसाधनों की बर्बादी होती है। पंचम चुनौती कार्यक्रमों के प्रभाव का आकलन करना है। बिना उचित मूल्यांकन प्रणाली के, NGO यह नहीं जान पाती कि उनके कार्यक्रम वास्तव में कितने प्रभावी हैं।

षष्ठ चुनौती तकनीकी क्षमता का अभाव है। छोटी NGO में डिजिटल प्रौद्योगिकी, डेटा प्रबंधन और ऑनलाइन संचार की क्षमता सीमित होती है। इससे वे डिजिटल युग में पिछड़ जाती हैं और अपने कार्यक्रमों को व्यापक दर्शकों तक नहीं पहुंचा पातीं।

6. NGO और सरकार: सहयोग की संभावनाएं

स्तन कैंसर नियंत्रण में NGO और सरकार के बीच सहयोग की असीमित संभावनाएं हैं। सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में NGO महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत NGO को 'इम्प्लीमेंटेशन पार्टनर' के रूप में शामिल करके उनकी जमीनी पहुंच का लाभ उठाया जा सकता है।

सार्वजनिक-निजी-स्वयंसेवी भागीदारी (Public-Private-Voluntary Partnership) का मॉडल स्तन कैंसर जागरूकता में विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है। इस मॉडल में सरकार नीति और बुनियादी ढांचा प्रदान करे, निजी क्षेत्र वित्तीय संसाधन दे, और NGO जमीनी क्रियान्वयन करें। केरल और तमिलनाडु में इस मॉडल के सफल उदाहरण मौजूद हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

7. निष्कर्ष एवं सुझाव

स्तन कैंसर जागरूकता के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका अपरिहार्य है। वे सरकारी कार्यक्रमों की पूरक के रूप में कार्य करती हैं और उन वर्गों तक पहुंचती हैं जहां सरकारी तंत्र नहीं पहुंच पाता। आवश्यकता है कि सरकार NGO को अधिक संसाधन और नीतिगत समर्थन प्रदान करे।

सुझाव हैं: प्रथम, NGO को नियमित और पर्याप्त सरकारी अनुदान मिले। द्वितीय, NGO को पंजीकरण, रिपोर्टिंग और अनुपालन में सरलीकरण हो। तृतीय, NGO और अस्पतालों के बीच औपचारिक रेफरल व्यवस्था बनाई जाए। चतुर्थ, NGO को क्षमता-निर्माण प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए। पंचम, NGO के कार्यों का स्वतंत्र मूल्यांकन किया जाए ताकि सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान हो।

अंततः, समाज कार्य के दृष्टिकोण से NGO केवल सेवा-प्रदायक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता हैं। जब NGO, सरकार, समुदाय और महिलाएं एक साथ मिलकर काम करती हैं, तभी स्तन कैंसर के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन संभव होता है।

संदर्भ सूची

1. Datta, S. & Misra, S. (2019). Role of NGOs in Breast Cancer Awareness in India. Asian Pacific Journal of Cancer Prevention, 20(4), 1023-1031.
2. Indian Cancer Society (2021). Annual Report. Mumbai: ICS Publications.
3. NITI Aayog (2020). SDG India Index and Dashboard. New Delhi: NITI Aayog.
4. Raina, V. et al. (2020). Cancer awareness and early detection in India. The Lancet Regional Health, 2, 100039.
5. Patel, A.R. & Chaturvedi, H.K. (2018). NGO participation in health programmes in Chhattisgarh. Journal of Health Management, 20(3), 315-325.
6. Singh, P. (2021). Community-based approaches to breast cancer awareness in central India. Indian Journal of Social Work, 82(2), 201-218.
7. FCRA Division, Ministry of Home Affairs (2022). Report on Foreign Contribution Regulation. New Delhi: GoI.
8. Tripathi, N. (2020). Voluntary Sector and Health in Rural India. New Delhi: Sage Publications.
9. Sinha, A. (2021). Public-Private-Voluntary Partnerships in Cancer Control. Health Policy and Planning, 36(5), 723-731.
10. Kumar, R. et al. (2022). Impact of NGO-led interventions on breast cancer awareness in tier-2 cities. Indian Journal of Public Health, 66(3), 291-298.

© Copyright @ Authors